4. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. *'गोल हैं खूब मगर*
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा'
में क्या व्यंग्य छिपा है?

उत्तर—आप बिलकुल गोल दिखाई देते हैं, यह ठीक है, पर साथ ही यह भी सच है कि तुम तिरछे हो, अर्थात् सीधे नहीं, सरल स्वभाव के नहीं, तुममें टेढ़ापन है। इसमें यह व्यंग्य छिपा है कि आप गोल होते हुए भी टेढ़े हैं, तिरछे हैं।

प्रश्न 2. *'हमको बुद्धू ही निरा समझा है!'* **कहकर लड़की क्या कहना चाहती है?**

उत्तर—लड़की चाँद को यह स्पष्ट कर देना चाहती है कि हम सब समझते हैं। हम इतने बुद्धू नहीं जितना तुम हमें समझते हो! हम तुम्हारी एक-एक चाल को समझते हैं। तुम्हारी वास्तविकता से हम पूरी तरह से परिचित हैं और तुम्हारे बारे में सब जानते हैं। हम नादान नहीं, यह तुम अच्छी तरह से समझ लो।

प्रश्न 3. कवि ने यह क्यों कहा है—*सिर्फ़ मुँह खोले हुए अपना?*

उत्तर—आकाश में चाँद निकला हुआ है। वह गोल-मटोल और गोराचिट्टा है। मुँह भी गोल-मटोल और गोरा-चिट्टा होता है। अतएव चाँद और मुँह की समानता के कारण कवि ने यह कहा है—सिर्फ मुँह खोले हुए अपना। मुँह के अतिरिक्त चाँद के शरीर का और कोई अंग दिखाई नहीं दे रहा।

प्रश्न 4. चाँद को कौन-सा रोग है? लड़की उसे असाध्य क्यों कहती है?

उत्तर—चाँद घटता और बढ़ता रहता है। वह प्रतिपदा से धीरे-धीरे बढ़ना आरंभ करता है और पूर्णमासी को बढ़कर पूर्ण हो जाता है। पूर्णमासी की रात को वह पूरी तरह से गोल होता है। उसके बाद वह घटना आरंभ कर देता है। वह घटते-घटते अमावस्या की रात को बिलकुल गुल हो जाता है। अतएव चाँद को घटने और बढ़ने का रोग है।

इस रोग का कोई इलाज नहीं। चाँद के घटने और बढ़ने को नहीं रोका जा सकता। इसीलिए लड़की ने चाँद के इस रोग को असाध्य कहा है।

प्रश्न 5. *'बिलकुल गोल'* **के दो अर्थ हैं। कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर—बिलकुल गोल का एक अर्थ है जो पूरी तरह से गोल हो और दूसरा अर्थ है—समाप्त हो जाना, बिलकुल भी दिखाई न देना।

इसका प्रयोग चाँद के प्रसंग में किया गया है। चाँद पूर्णमासी की रात को पूरी तरह से गोल होता है। यही चाँद घटते-घटते अमावस्या की रात को पूरी तरह गोल हो जाता है, यानि कि बिलकुल समाप्त हो जाता है, दिखाई नहीं देता है।

Scanned with CamScanner